National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 3; September 2017; Page No. 248-252

उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन

[1] शशि चौधरी, [2] डॉ० कविता मित्तल
[1] शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत।
[2] प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान, भारत।

सारांश
मनुष्य जीवनपर्यन्त सीखता रहता है तथा उसके अनुभवों में निरन्तर अभिवृद्धि होती है। जैसे–जैसे वह अधिकाधिक सीखता जाता है तथा परिपक्व होता है वह ऐसे अनुबन्ध प्राप्त करता है जो उसके व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ये निर्देशक जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। इन्हें मूल्य कहा जा सकता है। व्यवहार के निर्देशक के रूप में मूल्य अनुभवों के विकसित व परिपक्व होने के साथ–साथ विकसित तथा परिपक्व होते हैं। मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना का वरीयता प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों के विभिन्न पक्षों जैसे – धार्मिक, सामाजिक, लोकतान्त्रिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुखवादी, शक्ति, परिवार–प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य मूल्यों का लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द : मनुष्य, शिक्षकों, व्यवहार।

प्रस्तावना :

शिक्षा का मूल उद्देश्य 'शिक्षते उपादीयते विद्यामया सा शिक्षा' अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान उपादान किया जाए वह शिक्षा है। शिक्षा का मूल उद्दद्देश्य व्यक्ति को एक अच्छा मनुष्य बनाना है, जो श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से युक्त हो। उसमें 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना तथा द्रुतगति से बदलते युग के साथ मानव कल्याण और उसके विकास हेतु सदा तत्पर रहने की क्षमता हो।

मूल्य परक शिक्षा की अवधारणा प्राचीन है। अर्थात् मूल्यों का सम्बन्ध भावनात्मक परिवर्तन से है, न कि किताबी दृष्टान्तो से है। जैसे सूर्योदय होने पर सूर्यज्योति सभी सतहो पर समान रूप से प्रकाश फैलाती है उसी प्रकार हमारे भीतर हृदय में भी ज्ञान की ज्योति प्रत्येक विचार की ऊँचाई, चौड़ाई और गहराई को प्रकाशित और ऊर्जावान करेगी तभी मानव मूल्यों की शिक्षा का काम सार्थक हो सकेगा। इसके लिए शिक्षक को जागना होगा। इसके अतिरिक्त कोई भागीरथी नहीं है जो कि शिक्षा में मूल्यों की गंगा को पृथ्वी पर ला सके। शिक्षक होना बड़ी साधना है। शिक्षक वही है जो प्रसुप्त समस्याओं को जगा देता है और जिज्ञासा को जागृत कर देता है और बच्चों को उनके स्वयं के अनुसंधान के लिए साहस और अभय से भर देता है। शिक्षक ही सभ्यता का दीपक जलाए रखने में सक्षम है। हमारे देश के निर्माण में उनका योगदान बहुमूल्य रहा है। और अभी भी रह सकता है यदि वे अतीत की परम्पराओं का पालन कर मनुष्य, समाज और राष्ट्र के उत्थान पर ध्यान दें। यह बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है, यदि शिक्षक इसे पूरा कर सकेगा तो नये जीवन मूल्य और एक नयी मनुष्यता का जन्म हो सकता है।

मूल्य की परिभाषायें

आलपोर्ट के अनुसार : मूल्य एक मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्राप्त करते हुये कार्य करता है।

जै. आर. फ्रैंकल के अनुसार : मूल्य आचार, सौन्दर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड हैं जिनका लोग समर्थन करते हैं, जिनके साथ वे जीते हैं तथा जिन्हें वे कायम रखते हैं।

ब्राइटमैन के अनुसार : आदर्श व्यवहार को मूल्य कहा जाता है।

आटवे के अनुसार : मनुष्य जिसके लिये जीता है, जिसके लिए मरता है, वही उसका मूल्य कहलाता है।

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मूल्य आदर्शात्मक व्यवहार होते हैं। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य या व्यवहार को उसके मूल्य प्रभावित करते हैं मूल्य अधिगमित होते हैं इसलिए देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार मूल्य परिवर्तित होते हैं। मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं

शोधकर्त्री द्वारा शिक्षकों के मूल्यों से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन किया गया है

श्रीवास्तव, वी. (2002) ने हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, मूल्य एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया,सिंह (2005) ने तनाव एवं व्यावसायिक मूल्यों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया, मोति, रुबिना (2008) ने माध्यमिक अध्यापकों की प्रभावशीलता का उनके मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन किया, श्रीवास्तव, वी. (2002) ने हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयी शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य, मूल्य एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन किया, पूनम (2002) ने माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षकों के कार्य मूल्य और कार्य संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन किया। इस प्रकार मूल्यों का विभिन्न चरों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया जिससे प्रस्तुत शोध हेतु शिक्षक मूल्य का लिंग के निर्धारण के लिए निर्देशन प्राप्त हुआ।

समस्या कथन

उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

शोध परिकल्पना 1: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

प्रस्तुत शोध परिहल्पना की जॉच हेतु प्रत्येक मूल्य के सन्दर्भ में शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया जो इस प्रकार है–

शून्य परिकल्पना 1.1: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.2: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.3: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.4: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.5: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.6: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.7: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सुखवादी मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.8: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के शक्ति मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.9: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के परिवार– प्रतिष्ठा मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना 1.10: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन के चर
स्वतन्त्र चर : मूल्य
आश्रित चर : शिक्षक
मध्यस्थ चर : लिंग

संक्रियात्मक परिभाषायें
उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षक
प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षक से अभिप्राय सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कक्षा 6,7,8 में शिक्षण करने वाले शिक्षकों से है।

मूल्य
मूल्य वे विश्वास हैं जिन्हें व्यक्ति अनुभव के द्वारा अर्जित करता है परन्तु मूल्य केवल विश्वास ही नहीं हैं। ये अभिवृत्तियों से भी भिन्न हैं। मूल्यों का संबंध ऐसे वांछित लक्ष्यों, आदर्शों या कार्य के ढ़ंगों से संबंधित हैं जिनके कारण व्यक्ति एक प्रकार का व्यवहार न करके दूसरे प्रकार का व्यवहार करता है स्पष्ट है कि मूल्यों के कारण व्यक्ति के व्यवहार में चयनशीलता पायी जाती है अथवा यह कहें कि मूल्यों में भिन्नता के कारण व्यक्ति के व्यवहारों में भिन्नता होती है।

अनुसंधान विधि
प्रस्तुत शोध की समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर सर्वेक्षण विधि को शोध विधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

प्रदत्तों के स्रोत
प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के स्रोत प्राथमिक हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षक प्रदत्तों के स्रोत हैं।

जनसंख्या
प्रस्तुत शोध हेतु जनसंख्या के रूप में उत्तरप्रदेश के आगरा मंडल के मथुरा तथा आगरा, जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

न्यायदर्श
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा आगरा मंडल के मथुरा और आगरा जिले के उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों में कार्यरत कुल 200 शिक्षकों (100 महिला तथा 100 पुरुष) को यादृच्छिक विधि के माध्यम से न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

शोध उपकरण
शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्त संकलन हेतु पर्सनल वैल्यूज क्वैश्नेयर (जी. पी. शैरी द्वारा निर्मित) शोध उपकरण प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी
अध्ययन के उद्देश्यों एवं प्रदत्तों की प्रकृति के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकी द्वारा किया गया है।

लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या
उच्च प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मूल्य सम्बन्धी प्रदत्तों के विश्लेषण को कतिपय तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के धार्मिक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	11.83	3.02	0.30	0.800	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	12.17	2.93	0.29				

तलिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान 11.83 है तथा पुरुष शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मध्यमान 12.17 है। महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मानक विचलन 3.02 है तथा पुरुष शिक्षकों के धार्मिक मूल्य का मानक विचलन 2.93 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.800 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.1– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का धार्मिक मूल्य समान होता है।

तालिका 2: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सामाजिक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	12.06	2.93	0.29	1.93	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	11.27	2.83	0.28				

तलिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 12.06 है तथा पुरुष शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मध्यमान 11.27 है। महिला शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मानक विचलन 2.93 है तथा पुरुष शिक्षकों के सामाजिक मूल्य का मानक विचलन 2.83 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.93 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.2– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का सामाजिक मूल्य समान होता हैं।

तालिका 3: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	14.97	2.98	0.29	1.48	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	14.32	3.20	0.32				

तलिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का मध्यमान 14.97 है तथा पुरुष शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्यों का मध्यमान 14.32 है। महिला शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का मानक विचलन 2.98 है तथा पुरुष शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य का मानक विचलन 3.20 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.48 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.3– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के लोकतान्त्रिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का लोकतान्त्रिक मूल्य समान होता हैं।

तालिका 4: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	11.78	2.88	0.28	0.366	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	11.92	2.52	0.25				

तलिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान 11.78 है तथा पुरुष शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान 11.92 है। महिला शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मानक विचलन 2.88 है तथा पुरुष शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य का मानक विचलन 2.52 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.366 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.4– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का सौन्दर्यात्मक मूल्य समान होता हैं।

तालिका 5: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के आर्थिक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	12.01	2.58	0.25	1.29	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	12.57	3.48	0.34				

तलिका संख्या 5 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान 12.01 है तथा पुरुष शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मध्यमान 12.57 है। महिला शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मानक विचलन 2.58 है तथा पुरुष शिक्षकों के आर्थिक मूल्य का मानक विचलन 3.48 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.29 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.5– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का आर्थिक मूल्य समान होता हैं।

तालिका 6: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	12.01	2.58	0.25	1.29	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	12.57	3.48	0.34				

तलिका संख्या 6 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मध्यमान 12.01 है तथा पुरुष शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मध्यमान 12.57 है। महिला शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य का मानक विचलन 2.58 है तथा पुरुष शिक्षकों

के ज्ञानात्मक मूल्य का मानक विचलन 3.48 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.29 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1. 97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.6– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का ज्ञानात्मक मूल्य समान होता हैं।

तालिका 7: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सुखवादी मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	11.39	2.56	0.25	0.312	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	11.51	2.87	0.28				

तलिका संख्या 7 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मध्यमान 11.39 है तथा पुरुष शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मध्यमान 11.51 है। महिला शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मानक विचलन 2.56 है तथा पुरूष शिक्षकों के सुखवादी मूल्य का मानक विचलन 2.87 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.312 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1. 97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.6– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के सुखवादी मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का सुखवादी मूल्य समान होता हैं।

तालिका 8: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के शक्ति मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	10.42	3.17	0.31	1.85	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	11.62	2.75	0.27				

तलिका संख्या 8 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मध्यमान 10.42 है तथा पुरुष शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मध्यमान 11.62 है। महिला शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मानक विचलन 3.17 है तथा पुरुष शिक्षकों के शक्ति मूल्य का मानक विचलन 2.75 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 1.85 है। टी का सारणी मूल्य 0. 01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.8– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के शक्ति मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का शक्ति मूल्य समान होता हैं।

तालिका 9: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	12.97	2.72	0.27	0.477	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	12.78	2.89	0.28				

तलिका संख्या 9 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान 12.97 है तथा पुरुष शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मध्यमान 12.78 है। महिला शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मानक विचलन 2.72 है तथा पुरुष शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य का मानक विचलन 2.89 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.477 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.9– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों का परिवार–प्रतिष्ठा मूल्य समान होता हैं।

तालिका 10: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य के अन्तर का सार्थकता स्तर

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	(S.E.)	टी–मूल्य (t)	स्वतन्त्रता की कोटि *df*	Table Value	सार्थक अन्तर (L.S.)
महिला	100	9.50	2.54	0.25	0.436	198	= 0.01 2.60 =0.05 1.97	सार्थक अन्तर नहीं है।
पुरूष	100	9.33	2.95	0.29				

तलिका संख्या 10 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान 9.50 है तथा पुरुष शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मध्यमान 9.33 है। महिला शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मानक विचलन 2.54 है तथा पुरुष शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य का मानक विचलन 2.95 है। प्राप्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.436 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना.1.10– ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के स्वास्थ्य मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों का स्वास्थ्य मूल्य समान होता हैं।

तालिका 11: लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों के अन्तर का सार्थकता स्तर

<table>
<tr><th>लिंग</th><th>संख्या (N)</th><th>मध्यमान (M)</th><th>मानक विचलन (S.D.)</th><th>(S.E.)</th><th>टी–मूल्य (t)</th><th>स्वतन्त्रता की कोटि df</th><th>Table Value</th><th>सार्थक अन्तर (L.S.)</th></tr>
<tr><td>महिला</td><td>100</td><td>119.92</td><td>2.26</td><td>0.22</td><td rowspan="2">0.170</td><td rowspan="2">198</td><td rowspan="2">= 0.01
2.60
=0.05
1.97</td><td rowspan="2">सार्थक अन्तर नहीं है।</td></tr>
<tr><td>पुरुष</td><td>100</td><td>119.87</td><td>1.88</td><td>0.18</td></tr>
</table>

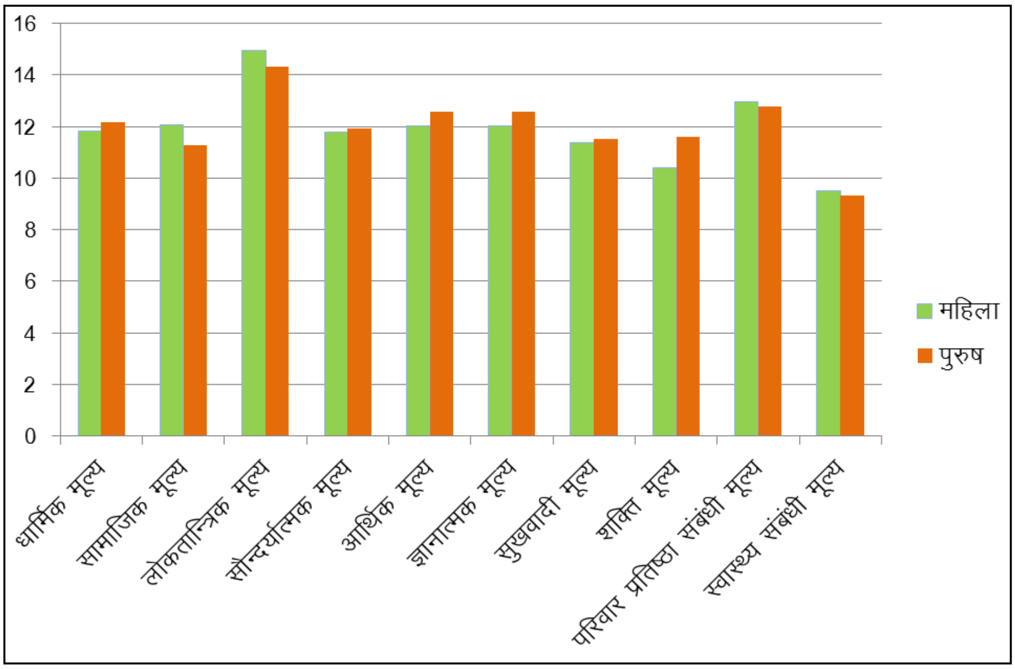

रेखाचित्र 1

तालिका संख्या 11 व रेखाचित्र 1 से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के मूल्यों का मध्यमान 119.92 है तथा पुरुष शिक्षकों के मूल्यों का मध्यमान 119.87 है। महिला शिक्षकों के मूल्यों का मानक विचलन 2.26 है तथा पुरुष शिक्षकों के मूल्यों का मानक विचलन 1.88 है। प्राप्त मध्यमानों के अंतर की सार्थकता जॉच करने पर प्राप्त टी–मूल्य 0.170 है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 2.60 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। प्राप्त टी–मूल्य सारणी मूल्य से कम है। प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर शोध परिकल्पना–1 ''लिंग के सन्दर्भ में उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है'' स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मूल्य समान होते हैं।

निष्कर्ष:

उच्च प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों के मूल्यों से संबंधित प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर कहा जा सकता है कि मूल्यों के अधिकांश क्षेत्रों में महिला एवं पुरुष शिक्षकों के मध्य सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी है परन्तु विश्लेषण के पश्चात प्राप्त आरेख चित्र से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों में सामाजिक, लोकतान्त्रिक, परिवार प्रतिष्ठा और स्वास्थ्य संबंधी मूल्य अधिक पाये गये हैं वहीं पर पुरुष शिक्षको में धार्मिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुखवादी तथा शक्ति मूल्य अधिक पाये गये हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि महिला एवं पुरुष दोनो शिक्षकों की भागीदारी सभी मूल्यों में दृष्टिगोचर हुयी है।

सन्दर्भः

1. गहाली विजया लक्ष्मी (2006), प्रायरटाइजेशन ऑफ सैकण्डरी स्कूल चिल्ड्रन्स वैल्यूज बाई देअर पेरेन्ट्स एण्ड टीचर्स, एजुट्रैक नीलकमल प्रकाशन, हैदराबाद पृष्ठ–34–38।
2. पचौरी गिरीश (2006), शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, लॉयल बुक डिपो, मेरठ।
3. सक्सेना राधारानी, शर्मा गोपीनाथ एवं शास्त्री इना (2000), उभरते हुये भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक, क्लासिक पब्लिकेशन्स, जयपुर।
4. सुरेश के. जे. एवं वी. पी. जोशी (2008), जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, वोल्यूम–7, पृष्ठ–57–61।
5. शर्मा, आर. ए. (2009), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार, विनय रखेजा आर. लाल. बुक डिपो. मेरठ–250001।